दो वर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

रजनी सिंह*
विवेकनाथ त्रिपाठी**

शिक्षा का केंद्र अध्यापक होते हैं और अध्यापकों की गुणवत्ता प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती है। शिक्षक का शिक्षण, शिक्षा के समस्त आयामों को प्रभावित करता है। इस शोध पत्र में बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। इस शोध में अध्ययन के लिए 200 विद्यार्थी-शिक्षकों का चयन उद्देश्यपरक न्यार्दश विधि से किया गया। जिसमें 100 विद्यार्थी-शिक्षक सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थान से लिए गए थे और 100 निजी शिक्षक शिक्षा संस्थान से लिए गए थे। इस अध्ययन को पूर्ण करने हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग तथा आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत प्रविधि एवं टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस शोध के परिणाम यह बताते हैं कि संस्थानों में पाठ्यक्रम एवं एन.सी.टी.ई. विनियम, 2014 के अनुसार कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला एवं अन्य भौतिक संसाधनों का अभाव पाया गया। मानवीय संसाधन के रूप में अधिकतम संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव भी पठन-पाठन में समस्या का एक प्रमुख कारण है। अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षकों ने समयावधि को लेकर दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की आलोचना की और सुझाव दिया कि सरकार को पुनः एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम बनाना चाहिए। दो वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रति सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर पाया गया। सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा का केंद्र अध्यापक होते हैं और अध्यापकों की गुणवत्ता शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने शिक्षक को राष्ट्रीय विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक माना है। शिक्षक, शिक्षा के समस्त आयामों को प्रभावित करते हैं। शिक्षक का शिक्षा जगत पर पूर्ण प्रभाव एवं महत्व रहता है। शिक्षक ही राष्ट्र को सही रूप प्रदान करने में पूर्णतः

* *शोधिका*, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 171 005
** *सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला 171 005

सक्षम होता है। शिक्षक का प्रशिक्षित होना शिक्षण के लिए आधारभूत ढाँचा तैयार करना होता है। शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक सुधार का विकास तभी संभव है, जब हमारे अध्यापक स्वयं में ज्ञान आलोक के पुंज होंगे। अतः सुधार हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण व्यवसाय को मनसा, वाचा एवं कर्मणा से अपनाया जाए और इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थान की नैतिक ज़िम्मेदारी भी होनी चाहिए तथा उसका साधन संपन्न होना भी आवश्यक है। लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि शिक्षक को अपने कार्य में स्वयं दक्ष होना चाहिए। समाज में एक तरफ़ भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद का प्रभाव एवं दबाव जिस गति से बढ़ता जा रहा है, उसी प्रकार शिक्षक शिक्षा को व्यवस्थित करना आवश्यक हो गया है। हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हमारे शिक्षक शिक्षा संस्थान उसी प्रकार के शिक्षक तैयार करें जो चुनौतियों को स्वीकार कर सकें तथा आगामी समाज को उसकी मानसिकता के अनुसार अध्यापकों को तैयार कर सकें।

बहुत दिनों से शिक्षक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों की समीक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही थी और यह आवश्यक भी है कि समय पर समाज की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम का परिमार्जन एवं नवीनीकरण किया जाए ताकि पाठ्यक्रम उन वर्तमान विद्यार्थियों की शिक्षण दक्षता, व्यावसायिक कौशलों को पूरा कर सके। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने शिक्षक शिक्षा में विनियम, 2014 लागू कर दिया, जो सत्र 2015 से प्रभावी है। इस विनियम में बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष कर दी गई। विद्यार्थियों में प्रशिक्षण कौशलों के विकास के लिए अभ्यास-शिक्षण जो एक माह का हुआ करता था; उसकी अवधि को चार माह कर दिया गया और अन्य अतिरिक्त विषयों को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण क्या है? इस पाठ्यक्रम के विभिन्न पक्षों के प्रति वे क्या सोचते हैं और उनका अपना विचार क्या है? पाठ्यक्रम के दौरान उनको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस पाठ्यक्रम को कैसे प्रभावी बनाया जाए? आदि बातों का अध्ययन करने के लिए इस शोध समस्या का चयन किया गया।

किसी भी देश की प्रगति उस देश की शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है और शिक्षा की गुणवत्ता उस देश के शिक्षकों पर निर्भर करती है। वैश्वीकरण एवं निजीकरण ने अध्यापक शिक्षा को बहुत ज़्यादा प्रभावित किया है। अधिकतम शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का पालन नहीं किया जाता और किया जाता है तो सिर्फ़ कागज़ों में, इस कारण अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है। 2011 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा केंद्रीय अध्यापक पात्रता परीक्षा की शुरुआत की गई और अध्यापक बनने के लिए पात्रता परीक्षा अनिवार्य कर दी गई। परंतु इस परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी-शिक्षकों की संख्या बहुत ही कम रही, यही स्थिति लगभग सभी राज्यों में रही। जो

अध्यापक शिक्षा और अध्यापकों की गुणवत्ता को दर्शाता है। इन शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा किस प्रकार प्रशिक्षण दिया जाए? कैसे संसाधन उपलब्ध कराए जाए? आदि कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए इस शोध समस्या का चयन किया गया। ताकि इन बिंदुओं, जैसे—पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक/व्यावहारिक पक्ष, अवधि, मूल्यांकन प्रविधि, अभ्यास-शिक्षण, संसाधन आदि पर विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सके।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना;
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना;
3. दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना; तथा
4. दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रभावी तरीके से संचालन हेतु सुझाव प्राप्त करना।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में 200 विद्यार्थी-शिक्षकों का चयन उद्देश्यपरक न्यादर्श विधि से किया गया, जिसमें 100 सरकारी शिक्षक शिक्षा एवं 100 गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों को लिया गया। इस चयन प्रक्रिया में कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी-शिक्षकों का चयन समान रूप से किया गया।

सांख्यिकी तकनीक

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, टी-परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

उपकरण

इस शोध अध्ययन में आँकड़ों के संग्रह हेतु शोधकर्ता द्वारा विकसित तीन बिंदुओं पर आधारित दृष्टिकोण मापनी का प्रयोग किया गया, जिसमें पाठ्यक्रम की अवधि, मूल्यांकन प्रविधि, संसाधन, शिक्षक, पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष आदि से संबंधित कुल 30 कथन थे। जिसमें दो कथन मुक्त प्रकृति के थे।

विश्लेषण एवं व्याख्या

दृष्टिकोण मापनी द्वारा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उद्देश्यों के अनुसार की गई है।

उद्देश्य 1 — दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना। इस हेतु दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए प्रतिशत प्रविधि का प्रयोग किया गया। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम और प्रतिशत का मान सारणी 1 में दिया गया है।

दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विभिन्न बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में सारणी 1 के अनुसार विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण की व्याख्या इस प्रकार है —

सारणी 1— दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण (प्रतिशत में)

क्रम संख्या	कथन	सहमत	असहमत	अनिश्चित
1.	अवधि बढ़ा देना सरकार का एक अच्छा प्रयास	50	50	—
2.	अवधि बढ़ा देने से गुणवत्ता में वृद्धि	61	39	—
3.	एन.सी.टी.ई. को प्रभावपूर्ण तरीके से लागू न करना	56	44	—
4.	अवधि बढ़ाने से नामांकन का घटना	63	30	7
5.	पाठ्यक्रम के संचालन हेतु संसाधनों का उपलब्ध न होना	90	2	8
6.	पाठ्यक्रम के अनुकूल पुस्तकालय में पुस्तकें उपलब्ध न होना	60	15	25
7.	पाठ्यक्रम समझने में स्पष्ट एवं सरल न होना	43	37.5	19.5
8.	पाठ्यक्रम को लागू करने हेतु विभिन्न बिंदुओं पर ध्यान	55	39.5	10.5
9.	वर्तमान व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति	55	—	45
10.	अत्यधिक विषयों का न होना	—	69	31
11.	प्रतिबद्धता से संबंधित विभिन्न आयाम	10	30	60
12.	पाठ्यक्रम और आदर्श शिक्षक के गुण न होना	59.5	—	40.5
13.	पाठ्यक्रम और आत्मविश्वास	40	—	60
14.	पाठ्यक्रम से प्रभावी संवाद कौशलों का विकास	50	50	—
15.	शिक्षण कौशलों का अधिक होना	—	—	—
16.	पाठ्यक्रम, सहायक सामग्री एवं पुस्तकों की उपलब्धता	60	15	25
17.	पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक विषयों की अपेक्षा व्यावहारिक पक्ष	56	33	11
18.	पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ	68	16	16
19.	पाठ्यक्रम एवं प्रयोगात्मक व्यावहारिक/पक्ष	88	12	—
20.	सूक्ष्म शिक्षण एवं विभिन्न शिक्षण कौशल	52	—	48
21.	पाठ्यक्रम एवं अभ्यास-शिक्षण की अवधि	45	52.5	2.5
22.	प्रशिक्षण एवं उपस्थिति का प्रतिशत	60	40	—
23.	पाठ्यक्रम की अवधि कम कर देना चाहिए	90	10	—
24.	वर्तमान पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रविधि से असंतुष्ट	51	21	28
25.	सेमेस्टर प्रणाली का उचित होना	55	41	4
26.	आंतरिक मूल्यांकन को अधिक महत्व न देना	55.5	42.5	2
27.	पाठ्यक्रम पूरी तरह समझ आ रहा है	—	—	—
28.	शिक्षक	—	—	—
29.	समस्याओं का सामना करना पड़ा			
30.	संचालन हेतु सुझाव			

अवधि— बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ा देना सरकार का एक अच्छा प्रयास है, के संबंध में 50 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने उचित एवं अच्छा प्रयास बताया, जबकि 50 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक सरकार के अवधि बढ़ाने वाले प्रयास को उचित नहीं बताते हैं। वहीं जब विद्यार्थी-शिक्षकों से अवधि बढ़ाने से गुणवत्ता में वृद्धि होगी, इस संबंध में विचार लिया तो लगभग 61 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने इसको सही एवं उचित बताया। विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि प्रशिक्षण की अवधि बढ़ाने से अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता की वृद्धि होगी, जबकि 39 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार अवधि एवं गुणवत्ता में कोई संबंध नहीं है।

नब्बे प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह स्वीकार करते हैं कि नामांकन बढ़ाने हेतु सरकार को पाठ्यक्रम की अवधि कम कर देनी चाहिए, जबकि केवल 10 प्रतिशत इस संबंध में असहमति व्यक्त करते हैं।

दो वर्षीय पाठ्यक्रम को लागू करना — प्रशासन द्वारा एन.सी.टी.ई. विनियम, 2014 को प्रभावपूर्ण रूप से लागू करने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। इस संबंध में 56 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार प्रशासन इस दो वर्षीय पाठ्यक्रम को पूर्ण रूप से लागू करने के लिए पूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है। वहीं केवल 44 प्रतिशत इस बात पर सहमति व्यक्त करते हैं कि प्रशासन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण यह है कि विनियम, 2014 को प्रभावपूर्ण तरीके से लागू करने के लिए प्रशासन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा रहा है।

नामांकन — तिरसठ प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ा देने से ही बी.एड. में नामांकन घटता जा रहा है। जबकि 30 प्रतिशत असहमति व्यक्त करते हैं। केवल 7 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक इस संबंध में अपना कोई मत नहीं देते हैं।

संसाधन — नब्बे प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार शिक्षक शिक्षा संस्थानों में दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रभावपूर्ण संचालन हेतु पर्याप्त मात्रा में मानवीय एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। केवल दो प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह बता रहे हैं कि संसाधन उपलब्ध हैं। वहीं पर 60 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकालय में पुस्तकें भी उपलब्ध नहीं हैं।

पाठ्यक्रम — वर्तमान पाठ्यक्रम व्यावसायिक कौशलों की पूर्ति करता है एवं पाठ्यक्रम में अत्यधिक विषयों को शामिल किए जाने के संबंध में क्रमशः 31 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने अपने विचारों में अनिश्चितता प्रकट की, वहीं पर 69 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार पाठ्यक्रम में अत्यधिक विषयों को शामिल किया जाना उचित नहीं है। विद्यार्थी-शिक्षकों ने यह बताया कि पाठ्यक्रम को प्रभावी तरीके से लागू करने से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर ध्यान नहीं दिया गया। 59.5 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यक्रम में आदर्श शिक्षक बनाने के लिए एवं मूल्यों के विकास हेतु पर्याप्त प्रावधान नहीं हैं। लगभग 50 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह स्वीकार कर रहे हैं कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम से प्रभावी संवाद कौशलों का

विकास हो रहा है। वहीं उतने ही प्रतिशत इस संबंध में असहमति व्यक्त कर रहे हैं। केवल 43 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि यह पाठ्यक्रम समझने में स्पष्ट एवं सरल नहीं है, जबकि 37.5 प्रतिशत यह मान रहे हैं कि पाठ्यक्रम स्पष्ट एवं सरल है। वहीं 60 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों का दृष्टिकोण यह है कि पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकालय में पर्याप्त मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। केवल 15 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मान रहे हैं की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक पक्ष — शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक पक्ष की अपेक्षा व्यावहारिक पक्ष को अधिक महत्व दिया गया है, जो एक अच्छा प्रयास है। इस संबंध में 56 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने अपनी सहमति, 33 प्रतिशत ने असहमति और केवल 11 प्रतिशत ने कोई विचार प्रस्तुत नहीं किए। 68 प्रतिशत से अधिक अर्थात् अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया की वर्तमान पाठ्यक्रम में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्व दिया गया है, जबकि केवल 16 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक इस संबंध में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं।

पाठ्यक्रम में व्यावहारिक पक्ष — अभ्यास-शिक्षण की अवधि अधिक होने के संबंध में 45 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि इससे शिक्षण कौशलों के विकास में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वहीं पर 52.5 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह भी स्वीकार करते हैं कि सूक्ष्म शिक्षण की अवधि एवं कौशलों को बढ़ाया जाना (पूर्ण) प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से एक उचित कदम नहीं है। दूसरी तरफ़ अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षक (88 प्रतिशत) ने यह स्वीकार किया कि व्यावहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान देते हुए सैद्धांतिक विषयों को कम कर देना चाहिए।

शिक्षक — शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को पूरा करने हेतु शिक्षक पूर्ण रूप से प्रशिक्षित हो, के संबंध में विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि शिक्षक वर्तमान पाठ्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षित हैं।

उपस्थिति — उपस्थिति का प्रतिशत बढ़ा देने से विद्यार्थी-शिक्षकों के प्रशिक्षण स्थिति पर असर पड़ेगा, के संबंध में 60 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने इसे उचित माना, जबकि 40 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार उपस्थिति का प्रशिक्षण से कोई संबंध नहीं है।

मूल्यांकन प्रविधि— इक्यावन प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक वर्तमान पाठ्यक्रम की मूल्यांकन प्रविधि से पूरी तरह असंतुष्ट हैं। 28 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने मूल्यांकन प्रक्रिया के बारे में कोई विचार प्रस्तुत नहीं किए, जबकि केवल 21 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक मूल्यांकन की प्रविधि को उचित मानते हैं। वहीं पर 55.5 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक यह मानते हैं कि पाठ्यक्रम में आंतरिक मूल्यांकन पर अधिक महत्व नहीं दिया गया है। जबकि 42.5 इस पक्ष में हैं कि पाठ्यक्रम में आंतरिक मूल्यांकन को महत्व दिया गया है।

वर्तमान पाठ्यक्रम में सेमेस्टर प्रणाली एक उचित कदम है, के संबंध में 55 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने इसे सही ठहराया, जबकि 41 प्रतिशत ने गलत। केवल 4 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने इस संबंध में अनिश्चितता व्यक्त की।

सारणी 2 — समूहवार न्यादर्श, मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-प्राप्तांक को दर्शाती सारणी

समूह	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	दोनों समूह के बीच मध्यमान का अंतर	मानक विचलन का अंतर	टी-प्राप्तांक
सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थान के विद्यार्थी-शिक्षक	100	74.43	7.24	2.7	1.03	2.62
गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थान के विद्यार्थी-शिक्षक	100	71.73	7.54			

उद्देश्य 2 — सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना। इस हेतु शून्य परिकल्पना "सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" इस परिकल्पना की जाँच हेतु टी-परीक्षण का प्रयोग किया, जो सारणी 2 में दिया गया है।

सारणी 2 से स्पष्ट है कि टी-अनुपात का मान 2.62 है, जो .01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.60 से अधिक है। अतः परिकल्पना "सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकार किया जाता है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रति सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर है। मध्यमान के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।

उद्देश्य 3 — दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों को आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना। इस हेतु दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को होने वाली समस्याओं से संबंधित प्राप्त परिणाम सारणी 3 में दिए गए हैं।

पचानवे प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी-शिक्षकों ने अभ्यास-शिक्षण की अवधि का अधिक होना बताया, जो बिना पारिश्रमिक एवं निरीक्षण के हो रहा है, एक प्रमुख समस्या है। वहीं पर 85 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने बताया कि मॉडल विद्यालय अर्थात् प्रशिक्षण के लिए विद्यालय का न होना या दूर

सारणी 3 — पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को होने वाली समस्याएँ

क्रम संख्या	कथन	संख्या	प्रतिशत
1.	पाठ्यक्रम की अवधि का अधिक होना	180	90
2.	धन का अपव्यय एवं फ़ीस वृद्धि	120	60
3.	संसाधनों की कमी	180	90
4.	समय का दुरुपयोग	140	70
5.	पाठ्यक्रम का भविष्य में कोई उपयोग नहीं	40	20
6.	प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव	120	60
7.	अत्यधिक पाठ्यक्रम	140	70
8.	पुस्तकों का अभाव	190	95
10.	मॉडल विद्यालय प्रशिक्षण के लिए विद्यालय का न होना	170	85
11.	अभ्यास-शिक्षण की अवधि का अधिक होना	190	95

होना भी एक बहुत बड़ी समस्या है, जिससे आर्थिक बोझ बढ़ गया है। बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष होना, 90 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार एक समस्या है। क्योंकि विद्यार्थी-शिक्षक यह बता रहे हैं कि अवधि अधिक होने से फ़ीस में वृद्धि हो गई है। जो एक आर्थिक समस्या का प्रमुख कारण बन रही है। लगभग 60 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार दो वर्ष का पाठ्यक्रम होने से धन का अपव्यय हो रहा है। आगे उन्हें शुल्क, आवास के खर्च आदि के रूप में आर्थिक समस्याओं का सामना करना पढ़ रहा है।

लगभग 90 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार शिक्षक शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम एवं एन.सी.टी.ई. विनियम, 2014 के अनुसार कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला एवं अन्य भौतिक संसाधनों का अभाव है। मानवीय संसाधन के रूप में अधिकतम शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं है। लगभग 60 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव भी पठन-पाठन में समस्या का एक प्रमुख कारण बन रहा है। 95 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार शिक्षक शिक्षा संस्थानों के पुस्तकालयों में नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकों का अभाव है, जो हम लोगों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है। जिसके कारण अध्ययन बाधित होता है। केवल 20 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक अनुपयुक्त विषय जो पाठ्यक्रम में हैं, ऐसे विषय जो भविष्य में उपयोगी न हों, को समस्या के रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं।

उद्देश्य 4 — दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रभावी तरीके से संचालन हेतु सुझाव प्राप्त करना। इस हेतु विद्यार्थी-शिक्षकों ने अपने निम्नलिखित सुझाव प्रदान किए—

- औसत से अधिक विद्यार्थी-शिक्षकों ने यह सुझाव दिया की पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक विषयों

को कम कर प्रयोगात्मक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाए।

- पाठ्यक्रम अत्यंत व्यापक है और उसमें अत्यधिक अनावश्यक विषयों को सम्मिलित किया गया है, जो वर्तमान दृष्टि से उपयोगी नहीं हैं, उन विषयों को हटाया जाए।
- अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षकों ने समयावधि को लेकर दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की आलोचना की और सुझाव दिया कि सरकार को पुनः एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम बनाना चाहिए।
- विद्यार्थी-शिक्षकों ने पाठ्यक्रम के अनुकूल संसाधनों को उपलब्ध कराकर पाठ्यक्रम लागू करना चाहिए था। उनके अनुसार प्रत्येक शिक्षक शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों का अभाव है, सरकार को आवश्यक मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए।
- विद्यार्थी-शिक्षकों की मूल्यांकन प्रणाली को और सुदृढ़ बनाया जाए, परिणाम समय पर निकाला जाए और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थी-शिक्षकों को रोज़गार भी उपलब्ध कराने का सुझाव दिया जाए।
- मूल्यांकन में शिक्षकों की शिक्षण शैली का मूल्यांकन किया जाए एवं हमारी उत्तर पुस्तिकाएँ दिखाने का प्रावधान किया जाए, के संबंध में सुझाव दिया।
- विद्यार्थी-शिक्षकों ने यह सुझाव दिया कि दो वर्षीय पाठ्यक्रम होने से शुल्क बढ़ गया है अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः शुल्क कम किया जाए।
- पाठ्यक्रम के अनुकूल पुस्तकालयों में पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएँ।
- बी.एड. पाठ्यक्रम के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु कक्षाओं का प्रावधान किया जाए।
- पाठ्यक्रम में उचित, उपयोगी एवं भविष्य के दृष्टिकोण से लाभदायक विषयों को सम्मिलित किया जाए। प्रशिक्षण के लिए सरकार को अभ्यास-शिक्षण हेतु पर्याप्त विद्यालय उपलब्ध कराना चाहिए।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रम एवं एन.सी.टी.ई विनियम, 2014 के अनुसार कक्षा-कक्ष, प्रयोगशाला एवं अन्य भौतिक संसाधनों का अभाव है। मानवीय संसाधन के रूप में अधिकतम संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। विद्यार्थी-शिक्षकों के अनुसार संस्थानों में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव भी पठन-पाठन में समस्या का एक प्रमुख कारण बन रहा है। अधिकतम विद्यार्थी-शिक्षकों ने समयावधि को लेकर दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की आलोचना की और सुझाव दिया कि सरकार को पुनः एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम बनाना चाहिए। दो वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रति सरकारी एवं गैर-सरकारी शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों के दृष्टिकोण में अंतर है। सरकारी संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षकों का दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव

प्रशिक्षण में कमी हमेशा व्यक्तिगत कारणों से नहीं होती, कुछ सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से भी होती है। हमें उस व्यवसाय की वास्तविक स्थिति का आकलन कर सकारात्मक दिशा में प्रयास करना चाहिए।

- अध्यापक शिक्षा में कार्यरत शैक्षणिक संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने संस्थानों में ऐसे शिक्षकों को तैयार करें जो पूर्ण रूप से अपने कर्त्तव्यों का पालन करें तथा समाज में एक प्रशिक्षित शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बना सकें।
- हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु क्या रणनीति अपनाई जाए। जिससे अध्यापकों में प्रशिक्षण के स्तर को बढ़ाया जाए तथा कार्य के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है।
- शिक्षकों में मूल्यों के अभाव एवं कारणों, जवाबदेही की कमी एवं आत्म चेतना में कमी के कारणों का पता लगाया जाए तथा मूल्यों के संरक्षण, जवाबदेही का निर्धारण किया जाए जिससे प्रशिक्षण में सकारात्मक सुधार लाया जा सके।
- समस्त शिक्षक शिक्षा संस्थानों, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रशिक्षण के महत्व को बताया जाए तथा पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण को उचित स्थान दिया जाए।
- अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षण में होती कमी या गिरावट के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने की आवश्यकता है।
- प्रशिक्षण के लिए जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए। अध्यापक शिक्षा से संबंधित नियमों, मूल्यों एवं जवाबदेही का निर्धारण किया जाए। अध्यापक को उनके दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का बोध कराया जाए तथा इसके प्रति उनमें जागरूकता लाई जाए। प्रशिक्षण से संबंधित अभ्यास कार्य पाठ्यक्रम में लाया जाए।
- शैक्षणिक प्रक्रिया के संपादन, प्रबंधन एवं पाठ्यक्रम के विकास में शिक्षकों की भूमिका दी जाए। जिससे उनकी जवाबदेही का निर्धारण किया जाए तथा उनकी उपलब्धि का आकलन किया जाए।

संदर्भ

अहमद, समीम. 2012. परसेप्शन रिगार्डिंग ओ.इ.आर. द केस ऑफ़ पर्सपेक्टिव टीचर्स. *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन*. वॉल्यम 37, नवम्बर-4, फरवरी 2012. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

एडवर्ड, एलन. 1969. *टेक्निक्स ऑफ़ एटिट्यूड स्केल कंस्ट्रक्शन*. वैकिलस फ़िफ़र एंड साइमंस प्राइवेट लिमिटेड, बॉम्बे विद ज्वाइंट इंडियन अमेरिकन प्रोग्राम.

कुमार. 2004. प्रारंभिक शिक्षा के भावी शिक्षकों की शिक्षक अभिवृत्तियों तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एवं समर्पण स्तर का अध्ययन.

गुप्ता, ए. पी. 2005. *सांख्यिकीय विधियाँ*. शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन, इलाहाबाद.

गुलहाने, जे. एल. 2008. इनोवेटिव एप्रोच टु द बी.एड. केरीकुलम इन द यूनिवर्सिटीज़ ऑफ़ महाराष्ट्र. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन रिसर्च एंड एक्सटेंशन*. वॉल्यूम-45, अंक 4, अक्तूबर-दिसम्बर, 2008. पृष्ठ 1–11. कोइम्बटूर.

जॉन, वी वेस्ट. 2000. *रिसर्च इन एजुकेशन*. प्रेंटिस हाल ऑफ़ इंडिया लिमिटेड.

जैन, रिचा. 2012. ऐटिट्यूड ऑफ़ टीचर्स टुवर्ड टीचिंग प्रोसेस ट्रेनड थ्रू फ़ॉर्मल एंड डिस्टेन्स मोड. *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

पाण्डेय, एम. एम. 2005. क्वालिटी एनालिसिस ऑफ़ बी.एड. करीकुलम इम्पलिमेंटेशन एंड ऑउटकम प्रोजेक्ट ऑफ़ द आर.आई.ई., अजमेर, रिपोर्ट्स बाए इरिक, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

पाण्डेय, योगेन्द्र और वरुन कुमार दुबे. 2012. प्रॉब्लम फ़ेसड बाई स्पेशल टीचर्स इन इम्पलिमेंटिंग इंक्लूसिव एजुकेशन अंडर सर्व शिक्षा अभियान. *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन*. वॉल्यूम 38, नवम्बर 1, मई 2012. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

पारू, आर. के. 2011. इफ़ेक्ट ऑफ़ प्रोफ़ेशनल डेवेलपमेंट प्रोग्राम ऑन दी ऐटिट्यूड ऑफ़ प्री-सर्विस टीचर्स टुवर्ड स्टूडेंट्स विद स्पेशल नीड्स. *जर्नल ऑफ़ इंडियन एजुकेशन*. वॉल्यूम 38, पृष्ठ 46–58. एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली.

बंधोपाध्याय, 2006. शिक्षक. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. जुलाई-अक्तूबर संयुक्तांक, वर्ष 25, अंक 1-2. पृष्ठ 1–5. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

यूनिनियाल, एन. पी. और ए.स.के. लखेरा. 2007. नॉलेज एंड अवेयरनेस लेवल ऑफ़ टीचर्स अंडर गोइंग बी.एड. ट्रेनिंग थ्रू डिस्टेन्स मोड ऑन एच. आइ वी. *इंडियन जर्नल ऑफ़ पॉपुलेशन एजुकेशन*. पृष्ठ 61–69. नयी दिल्ली.

यादव, सतीश. 2009. अध्यापक शिक्षा समस्याएँ एवं चुनौतियाँ. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. वर्ष 30, अंक 2. पृष्ठ 79–85. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

श्रीवास्तव, राजेश. 2012. जनजातीय शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, वर्ष-32, अंक-4, अप्रैल 2012. पृष्ठ 19–25. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. रेग्यूलेशन. 2014.